Vol. 35

मार्च-अप्रैल 2025

ज्ञानेन पुंसां सकलार्थ सिद्धि :

GYANODAYA PRABHA

Little Explorers Letting Go of Fun on the Sandy Beach

सम्पादकीय

बाज़ार, गली और कूचों में ग़ुल शोर मचाया होली ने
दिल शाद किया और मोह लिया ये जौबन पाया होली ने
- नज़ीर अकबराबादी

भारत की सांस्कृतिक विरासत अत्यंत समृद्धशाली है और त्योहार इसकी अमूल्य धरोहर |भारत के विभिन्न भागों में अनेक त्योहार बड़े धूमधाम से मनाए जाते हैं जैसे - होली, दिवाली , ईद ,मकर संक्रांति ,बैशाखी ,आदि |इनमे से होली भी एक प्रमुख त्योहार है |होली के त्योहार को रंगों का त्योहार कहा जाता है | यह एक ऐसा त्योहार है जिसमें हर उम्र के लोग मौज मस्ती में शामिल होकर इसे मानते हैं | होली का त्योहार सिर्फ रंगों का ही नहीं बल्कि भाईचारे एवं स्नेह का प्रतीक भी है | हिंदी साहित्य में भी अनेक साहित्यकारों ने इस विषय पर अपनी लेखनी चलायी है | हिंदी सिनेमा में अनेक गीत होली पर लिखे गए हैं जो इस त्योहार पर गाए बजाए जाते हैं |प्रतिवर्ष यह त्योहार फाल्गुन (मार्च) के महीने में मनाया जाता है |

भारत में होली का त्योहार प्राचीन समय से मनाया जाता रहा है। यह त्योहार हिंदू धर्म के विभिन्न पहलुओं, मान्यताओं और परंपराओं का प्रतीक है। होली का त्योहार वसंत ऋतु के आगमन, प्राकृतिक सौंदर्य और जीवन के नवीनीकरण का द्योतक है। यह न केवल रंगों से भरा एक खुशी का पर्व है, बल्कि धार्मिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। होली के विषय में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं |

हिंदू शास्त्रों के अनुसार, होली का त्योहार हिरण्यकश्यप और उनके बेटे प्रहलाद से जुड़ा हुआ है। हिरण्यकश्यप को भगवान ब्रह्मा से यह वरदान मिला था कि न तो कोई आदमी और न ही कोई जानवर उसे मार सकता था। अपनी इस शक्ति से अभिभूत होकर उसकी महत्त्वाकांक्षा बढ़ गई | वह चाहता था कि सब लोग उसे भगवान मानकर उसकी पूजा करें। लेकिन उसका बेटा प्रहलाद भगवान विष्णु का अनन्य भक्त था और उसने अपने पिता की पूजा करने से इनकार कर दिया।अपने पुत्र के इस व्यवहार ने उसे क्रोधित कर दिया और उसने अपनी बहन होलिका से कहा कि वह प्रहलाद को मार डाले। होलिका के पास एक अग्निरोधक कपड़ा था, जिससे वह प्रहलाद को जलाने के लिए उसके साथ आग में बैठ गई। लेकिन प्रहलाद ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की और उनकी कृपा से वह बच गया। वहीं, होलिका आग में जलकर मरी। इस घटना को धर्म की जीत और बुराई पर अच्छाई की विजय के रूप में देखा जाता है। दक्षिण भारत में होली को "काम दहन" के रूप में मनाया जाता है, जो भगवान शिव से जुड़ी एक घटना पर आधारित है। होली का त्योहार केवल धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व नहीं रखता, बल्कि यह कृषि के दृष्टिकोण से भी बहुत महत्वपूर्ण है। किसान अपनी फसलों के लिए पूजा करते हैं और अपने खेतों की उर्वरता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न अनुष्ठान करते हैं। रंगों और पानी के साथ होली का उत्सव प्राकृतिक जीवन के नवीनीकरण, वसंत के रंगीन फूलों और फसलों की समृद्धि का प्रतीक है।

होली का त्यौहार सामाजिक समरसता और भाईचारे को बढ़ावा देने वाला पर्व है। यह सभी उम्र के लोगों को एक साथ लाता है, जहाँ हर कोई रंगों में रंगकर खुशी मनाता है। इस दिन सामाजिक भेदभावों और बुराई को खत्म करने का संदेश दिया जाता है।हिंदी साहित्य और सिनेमा में भी होली को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। कई गीत, कविताएँ और फिल्में होली पर आधारित हैं, जो इस पर्व की मस्ती और रंगीनता को दर्शाती हैं। हिंदी सिनेमा में होली के गीत जैसे "रंग बरसे" और "होली के दिन" बहुत प्रसिद्ध हैं, जो इस दिन की खुशी और उल्लास को व्यक्त करते हैं।

आजकल होली न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी बड़े धूमधाम से मनाई जाती है। भारत के बाहर रहने वाले भारतीय समुदायों द्वारा होली के रंगोत्सव को उत्साह और उमंग से मनाया जाता है। विभिन्न देशों में होली के पारंपरिक खेलों और रंगों का उत्सव सामाजिक मेलजोल का एक अद्भुत तरीका बन चुका है।

होली एक ऐसा पर्व है, जो न केवल रंगों और मस्ती का प्रतीक है, बल्कि यह सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से भी बेहद महत्वपूर्ण है। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय, भाईचारे और सामाजिक एकता का संदेश देता है। भारतीय परंपरा में रंगों का यह उत्सव जीवन के नवीनीकरण और सृजनात्मकता का प्रतीक बनकर हर दिल को छूता है।आइए हम अपने जीवन में भी विविध रंग भरेंऔर अन्य लोगों को भी खुशियाँ बाटें |इसके साथ ही विद्यालय में नया सत्र शुरू हो रहा है | आप सबको नई कक्षा में पहुँचने की बधाई | नए उत्साह और उमंग के साथ अपनी शैक्षणिक यात्रा में आगे बढ़ें पिछली कक्षा से और अच्छा प्रदर्शन करने की रणनीति बनाएँ | नए सत्र में आप एक नए मुकाम पर पहुँचे | बहुत बहुत शुभकामनाएँ |

मार्च -अप्रैल माह की प्रमुख गतिविधियाँ

प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ला की विदाई

दिनांक 7 मार्च 2025 को प्राचार्य अभिनव शुक्ला को भावभीनी विदाई दी गई | इस अवसर पर संस्था के चेयरमैन श्रीमंत धर्मेन्द्र सेठ जी ,व्यवस्थापक श्रीमान अरुण जैन जी ,गुरुकुल विद्यालय के प्राचार्य श्री प्रियंक जैन जी ,ऋषभ अकादमी के प्राचार्य श्री असरफ जी, कोरासा विद्यालय के प्राचार्य श्री मोहित जैन जी , ज्ञानोदय विंग नोलेज विला की एच एम् सुश्री आकांक्षा सोनी जी , नव नियुक्त प्राचार्य श्री गिरीश वेलकर जी आदि सहित सम्पूर्ण विद्यालय परिवार उपस्थित था |

इस अवसर पर विद्यालय के चेयरमैन श्रीमंत धर्मेन्द्र सेठ जी ने प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ला के योगदान की चर्चा की ,डॉ अभिनव शुक्ला जी ने अपने कार्यकाल के अनुभवों को साँझा किया | इस अवसर पर स्टाफ सेक्रेटरी श्री प्रिंस राय ने समस्त शिक्षकों की ओर से प्राचार्य - डॉ अभिनव शुक्ला के कार्यकाल के दौरान हुए अनुभवों और प्राचार्य जी के योगदान का उल्लेख किया | कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ |चेयरमैन श्रीमंत धर्मेन्द्र सेठ जी ने डॉ अभिनव शुक्ला को अंग वस्त्र ,पुष्पगुच्छ,स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया ,व्यवस्थापक श्रीमान अरुण जैन जीने डॉ अभिनव शुक्ला का माल्यार्पण कर स्वागत किया | इस अवसर पर डॉ अभिनव शुक्ला का कला विभाग द्वारा बनाया गया चित्र भी प्रदान किया गया |

विद्यालय परिवार ने उनके उज्जवल भविष्य की कामना की |

इस अवसर पर व्यवस्थापक श्रीमान अरुण जैन जी ने नवनियुक्त प्राचार्य श्री गिरीश बेलकर जी को अंग वस्त्र ,पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया |

नव प्राचार्य की नियुक्ति

7 मार्च 2025 को ज्ञानोदय एस. एम्. व्ही. एम. विद्यालय में नए प्राचार्य श्री गिरीश बेलकर जी ने अपना कार्यभार संभाला | जबकि 27 मार्च को हरित कलम समारोह में ज्ञानोदय एस. एम्. व्ही. एम. विद्यालय के चेयरमैन श्रीमंत धर्मेन्द्र सेठ जी ने प्राचार्य जी को हरित कलम प्रदान कर एक औपचारिक शुरूआत की |

नवान्तुक प्राचार्य जी श्री गिरीश बेलकर जी गणित विषय (maths)से परास्नातक (post graduate) हैं | आपने आई आई टी मुंबई से प्रोफेशनल डेवलपमेंट एंड टेक्नोलोजी ओरिएंटेशन विषय पर सी ई पी कोर्स किया |आपने श्री राम सेंतेनिअल स्कूल इंदौर में उप प्राचार्य के रूप में कार्य किया | आप सन 2022 से 2023 तक फाउन्टेनहेड इंटरनेशनल स्कूल मौ में और 2023 से एकेडमिक हाइट पब्लिक स्कूल इंदौर में प्राचार्य के रूप में पदस्थ रहे |

आपका अनुभव विद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति में सहायक बनेगा ,ऐसी अपेक्षा करते हुए विद्यालय परिवार ने उन्हें शुभकामनाएँ दीं |

कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता

दिनांक 5 अप्रैल को ज्ञानोदय विद्यालय में मातृत्व दिवस के उपलक्ष्य में अंतरसदनीय कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया | इस प्रतियोगिता में 60 विद्यार्थियों ने भाग लिया और 4 विद्यार्थी विजयी रहे अलीना खान (टैगोर सदन) ने प्रथम प्रेक्षा जैन एवं प्रेरणा विश्वास (लक्ष्मी सदन)ने द्वितीय एवं गरिमा कुर्मी (सरोजनी सदन) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया | इस प्रतियोगिता में निर्णायकों की भूमिका श्री संस्कार जैन सर एवं श्री अशरफ सर ने निभाई | श्री मती स्वर्णाली सील एवं श्री प्रशांत सील इस प्रतियोगिता के प्रभारी थे

धूमधाम से मनाई गई भगवान् महावीर की जन्म जयंती

दिनाँक 10 अप्रैल को विद्यालय के छात्रावास में वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी की जन्म जयंती बड़े धूम धाम से मनाई गई |प्रातः ढोल नगाड़ों के साथ गुरुकुल प्रांगण में प्रभात फेरी निकाली गई जिससे पूरा प्रांगण भजनों और नारों से गूँज उठा |इसी क्रम में भगवान महावीर का अभिषेक शांतिधारा और पूजा आदि संपन्न हुई |सायंकाल में भगवान् महावीर स्वामी की आरती वाद्ययंत्रों के साथ संपन्न हुई और छात्रवास के छात्रों द्वारा माँ का कलेजा नामक एकांकी प्रस्तुत किया गया |

"टेकस्पार्क 2.0" तीन दिवसीय प्रशिक्षण:कार्यशाला

हमारे स्कूल के छात्रों ने आरआरसीएटी इंदौर में आयोजित "टेकस्पार्क 2.0" तीन दिवसीय प्रशिक्षण:कार्यशाला कार्यक्रम में भाग लिया है, जिसका आयोजन *एआईसी-पीआईई हब, आरआरसीएटी इंदौर* द्वारा किया गया था। यह युवा नवोन्मेषकों के लिए एक अद्भुत मंच है। यह कार्यक्रम एक महान प्रेरणा था, जिसने वास्तविक दुनिया में प्रभाव के लिए रचनात्मक विचारों को आकार देने के लिए बहुमूल्य मार्गदर्शन और प्रोत्साहन प्रदान किया। कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएँ
* छात्रों में उद्यमिता कौशल और गुणवत्ता का विकास करना
* स्टार्टअप कैसे शुरू करें
* बाजार की ज़रूरतों को कैसे सुधारें..
* स्टार्टअप के लिए बुनियादी तकनीकी आवश्यकताएँ
* स्टार्टअप में RRCAT PI HUB की भूमिका
* RRCAT द्वारा निर्मित उपकरण/डिवाइस
* लाइट एक्सप्लोरेटोरियम का दौरा
* लेजर के अनुप्रयोग
* RRCAT का शोध कार्य
* भविष्य की संभावनाएँ

ज्ञानोदय SMVM खुरई युवा प्रतिभाओं को पोषित करने और उनके विज़न को *विकसित भारत 2047* के साथ जोड़ने के प्रयासों के लिए

मनाली टू लेह: एक साईकिल यात्रा (यात्रा वृत्तान्त भाग -1)

आज दिनांक 8 जुलाई, 2018 थी और मैं अचानक प्रात: काल 4 बजे उठ खड़ा हुआ। साँस उखड़ रही थी और दिल द्रुतगति से धक- धक कर रहा था। इधर- उधर देखा और स्वयं को होटल के आरामदेह बिस्तर पर बैठा पाया। कमरे से बाहर की ओर झांका तो काले पहाड़ों की डरावनी आकृति और नवमी की रात कातर बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही थी। सन्नाटे को चीरते हुए झींगुरों की झुनझुन,सांय -सांय करती हवाओं से हिलते दरख्तों की भयावह पुकार, आन्दोलित पत्तों की चीख, अनवरत अनगिनत दरवेशों की चेतावनियों के स्वर और चौकीदार की सीटी, घटाटोप से आकार लेती विभिन्न प्रतिरूप और घनाच्छादित आकाश, और पिच्छलग्गु डाकिन परछायी सी- इन सभी के मिश्रण ने मुझे दोबारा कमरे के अंदर धकेल दिया। दीवार से कमर सटा कर कुछ देर बैठा ही था कि पिछले 20 दिन मस्तिष्क पटल पर चल-चित्र की भाँति क्रमवार कौंधते चले गए। धीरे- धीरे मैं उन अविस्मरणीय, अलौकिक, दिव्य एवं प्राकृतिक सौन्दर्य की यादों में समाता चला गया। विश्वास ही नहीं हो रहा था कि 20 दिन कैसे और कब व्यतीत हो गए और आज हम सभी अपने विद्यालय जाने के लिए आतुर हो रहे थे। यह सब एक स्वप्न सा लग रहा था और मैं शनै: शनै: उन अनुभवों में खोने लगा, जो संभवत: किसी- किसी को ही मिलता है।

यद्यपि रोमांच की कोई परिभाषा नहीं होती तथापि रोमांच अकल्पनीय और अनिर्वचनीय अहसास की संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है। इस रोमांच से अभिभूत हुआ मैं और मेरे साथी श्री विजय सिंह राठौड़ ने 15 छात्रों के साथ मनाली से लेह तक साईकिल यात्रा के लिए दिनांक 19 जून, 2018 को दिल्ली के हिमाचल भवन से लगभग सायं 7 बजे बस से मनाली के लिए रवाना हुए। दिल्ली से निकलते-निकलते ही 8:30 बज गए, उस समय यातायात अवरोध अपने पूर्ण यौवन पर होता है। रात भर का सफर तय करने के बाद हम सभी प्रात: 10 बजे मनाली पहुँच गए, जहाँ हमें लेने के लिए साईकिल यात्रा के व्यवस्थापकों का एक दल पहुँचा। वहाँ से हम होटल के लिए रवाना हुए जहाँ हमें दो दिन के लिए रूकना था। होटल पहुँचकर कुछ देर आराम किया और पर्यनुकूलन के लिए लगभग 3-4 कि0 मी0 का पर्वतारोहण किया। शाम को कुछ देर बाजार घूमने निकल गए, पूरा बाजार छान लिया परन्तु मेरे नाप की एक भी टी-शर्ट न मिल सकी। हताश होकर और हँसी का पात्र बनकर खाली हाथ ही लौटना पड़ा। अगले दिन हमें माउन्टेन बाईसाईकिल्स् से परिचय कराया गया और लगभग 25 कि0मी0 साईकिल चलाना का अभ्यास भी किया।

इसके अतिरिक्त हमें साईकिल चलाने के लिए पोशाक तथा उपकरण भी उपलब्ध कराए गए। इसी बीच जो कुछ संदेह थे, वे सब दूर होते चले गए। शारीरिक और मानसिक रूप से हम सभी तैयार थे- एक इतिहास रचने को।12 जुलाई, 2018 रविवार के दिन, सुबह ठीक 7 बजे हम सभी मनाली के वसिष्ठ नामक जगह पर एकत्रित हुए।

वहाँ पर मनाली के एस0 डी0 एम0 ने झंडा दिखाकर और हमें शुभकामनाएँ देकर विदा किया। सभी जोश में थे, कुछ अति उत्साहित भी दिखे। अत्युत्साह देखकर ऐसा लगा कि आसानी से ही लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। जैसे- जैसे चढ़ते जा रहे थे, साँसों का उच्छवास और नि:श्वास निरंतर दिल की धड़कन बढ़ाता जा रहा था। बारिश की बूँदाबांदी ने जहाँ तपती धूप से राहत दिलाई, वहीं बदन में तरो ताज़गी का भी आभास हुआ। एक ओर चढ़ाई परेशान कर रही थी, वहीं दूसरी ओर बदलता तापमान जान ले रहा था, परंतु अभी तो कष्ट का आरंभ था, चरमोत्कर्ष पर पहुँचना बाकी था। शाम को लगभग 40 कि0 मी0 यात्रा तय करने के बाद मरही नामक जगह पर पहुँचे और भोजन कर रात्रि विश्राम किया और दूसरे दिन की रणनीति पर विचार किया। हमारा रात्रि विश्राम एक घाटी में था, जिसके बराबर से एक नदी निकल रही थी, सामने रोहतांग पास दीख रहा था, बादलों से आच्छादित दोनों तरफ ऊँचे ऊँचे पहाड़ों पर चरते हुए पशुओं का झुंड मनोरम लग रहा था। सुबह पाँच बजे उठकर घास और पेड़ों का भोजन तैयार करने के पश्चात् लगभग सात बजे अभियान दल एक साथ बुलंदियों को छूने के लिए आगे बढ़ा। रोहतांग पास पहुँचने के बाद सभी ने कुछ तस्वीरें खींची! देखकर अत्यंत आश्चर्य हुआ कि वहाँ बर्फ का नामोनिशान तक नहीं था। वरना जून के समय वहाँ अच्छी खासे हिमखंड देखने को मिल जाते हैं। रोहतांग का अर्थ है जो रूह को टाँग देता है, यहाँ बहुत तीव्र गति से ठंडी हवा चलतीहै।

रास्ते में जान- माल हानि होने की संभावना रहती है।

रोहतांग के बाद लगभग 20 कि0 मी0 की तीव्र ढलान है। ऐसी तीव्र ढलानों में साईकिल का संभालना बहुत कठिन कार्य होता है। ज्यादा तेज़ ब्रेक लगाने से साईकिल फिसल भी सकती है और फिर सवार का छिलना तय है। प्राकृतिक शोभा का वर्णन वर्णनातीत था। उस अद्भुत दृश्य को महसूस ही किया जा सकता है, शब्दों में प्रकट करना दुष्कर कार्य होगा। जिस प्रकार जीवन में ऊँचाई प्राप्त करना कठिन होता है परन्तु अधोगति सरलता से ही प्राप्त हो जाती है, ठीक उसी दुष्कर चढ़ाई के बाद लगातार ढलान के स्वाद का मज़ा कुछ और ही था। मैं सबसे आगे था फिर कुछ छात्र, उसके बाद गाईड ओमप्रकाश जी फिर कुछ छात्र और अंत में विजय सिंह राठौड़ जी कुछ बच्चों का प्रतिनिधित्व करते दिखाईपड़ रहे थे। बहुत द्रुत गति से हम सभी ने उस ढलान को पार करते हुए लाहौल क्षेत्र में प्रविष्टि की। खोक्सर में मध्याह्न भोजन के पश्चात् लगभग 30 किमी0 और चलने के बाद सिसु को पार करते हुए सांध्यकाल 5 बजे अपने अगले गंतव्य में पहुँचे। सिसु पार करते हुए एक मानव निर्मित झील भी दिखी, जिसके एक ओर सैनिकों का कैम्प भी था। एक बार फिर से प्रकृति के नैसर्गिक सौन्दर्य को जी भर कर पिया।

हिमाच्छादित गगनचुम्बी पहाड़ों पर पयोधर की अटखेलियाँ और हिमशिखरों से लुका-छिपी का खेल देखकर अनयास ही थकावट छूमंतर हो गई। एकाग्र मन से पर्वतों को देखने पर अनेकानेक आकृतियाँ सहज ही आकार लेती दिखाई दे रही थीं। बहुत दूर चरती हुयी भेड़ों के झुंड और भागते हुए घोड़ों के समूह ने मन में भालुओं की संभ्रांति पैदा की, परंतु कैमरे के लैंस ने सभी शंकाओं को विराम लगा दिया।
(क्रमश:)

-डॉ अभिनव शुक्ला पूर्व प्राचार्य

विद्यार्थी कोना

प्रेमचंद : एक परिचय

उपन्यास सम्राट ,जनता के लेखक ,युग प्रवर्तक मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ। उनका असली नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। उन्होंने हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया | उन्हें उपन्यास सम्राट माना जाता है। प्रेमचंद का साहित्य सिर्फ कहानियों और उपन्यासों तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने समाज की समस्याओं, दीन-हीन वर्गों के संघर्ष, और भारतीय संस्कृति की गहराई को अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया।
प्रेमचंद का जीवन सरल और संघर्षमय था। वे दिखावे की प्रवृत्ति से दूर रहते थे |उनके पिता मुंशी अजायब लाल और माता आनन्दी देवी थे। उनका बचपन एक साधारण ग्रामीण वातावरण में बीता। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा लमही में प्राप्त की, जहाँ उन्होंने उर्दू और फ़ारसी का ज्ञान प्राप्त किया। अपने बचपन के अनुभवों को वह अपनी कहानी "कज़ाकी" में डालने में सफल रहे।
प्रेमचंद की रचनाएँ समाज की परतों को उजागर करती हैं। वह मानते थे कि समाज में अच्छाइयों की प्रबलता तब होती है जब लोग खुशहाल होते हैं। उन्होंने शोषित वर्ग के लोगों की आवाज़ को अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रमुखता से उठाया । उनका कथन "ए लोगो जब तुम्हें संसार में रहना है तो जिन्दों की तरह रहो, मुर्दों की तरह ज़िन्दा रहने से क्या फ़ायदा" समाज के प्रति उनकी संवेदनशीलता को दर्शाता है।
जहाँ तक प्रेमचंद जी के साहित्यिक योगदान का सम्बन्ध है ,उन्होंनेबहुत सी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ लिखीं, जिनमें 'ग़बन', 'कर्मभूमि', और 'गोदान' जैसी कृतियाँ शामिल हैं। ये उपन्यास न केवल पात्रों की भावनाओं को उजागर करते हैं, बल्किभारतीय समाज की जटिलताओं को भी दर्शाते हैं। उनकी कहानियों , जैसे 'बड़े घर की बेटी', 'पंच परमेश्वर', और 'नमक का दारोग़ा', ने अनगिनत पाठकों के दिलों में गहरी छाप छोड़ी ।

प्रेमचंद का व्यक्तित्व उनकी रचनाओं से भी अधिक प्रभावित करता है। वे एक सादा, सरल, और तीक्ष्ण बुद्धि के मालिक थे, जिन्होंने जीवन की विषमताओं का सामना करते हुए अपनी सृजनात्मकता को हमेशा बनाए रखा। उनके अंदर उदारता और मानवता का सागर था, जिसे वे अपने मित्रों और सहयोगियों के प्रति व्यक्त करते थे। प्रेमचंद उच्चकोटि के मानव होने के साथ-साथ ग्रामीण जीवन के प्रति गहरी रुचि रखते थे।
प्रेमचंद की मृत्यु 8 अक्टूबर 1936 को जलोदर रोग के कारण हुई। उनकी रचनाएँ और विचार आज भी पाठकों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। भारतीय डाक विभाग ने उनके सम्मान में 31 जुलाई 1980 को एक डाक टिकट भी जारी किया। प्रेमचंद का साहित्य सदैव सजीव रहेगा और उनका योगदान भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में अविस्मरणीय बना रहेगा। उनका प्रभाव साहित्यिक दुनिया से आगे बढ़कर समाज के हर वर्ग पर डाला गया है, और वे हमेशा के लिए भारतीय साहित्य के सितारे रहेंगे।

-ऋषिका श्रीवास्तव कक्षा 12 ब
" होली "

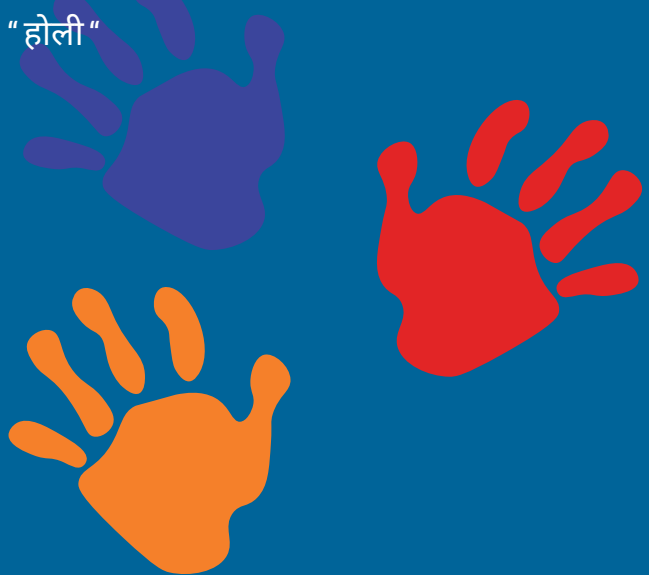

“होली आयी रे “

1-हवा में गुलाल है,
चारो और कमाल है|
खुशियाँ उड़ रही है,
यह होली का धमाल है |
2-आज मुबारक कल मुबारक,
होली का हर पल मुबारक,
रंग-बिरंगी होली में,
हमारा भी एक रंग मुबारक|
3-होली है रंगों का त्यौहार,
लाता है खुशियों की बहार |
सब इसके रंग में ऐसे घुल जाते,
मानो सभी के मुरझाये मन खिल जाते |
4-मीठा खाओ और खिलाओ,
सब मिलकर रंग जमाओ,
साल में एक बार आती होली,
सब मिलकर साथ मनाओ |

संग्रह- आदित्य जैन
कक्षा 7 A

“मेरा परिवार मेरी शक्ति “

मेरी फ़िक्र तो करेंगे ही, पर खुद की करना भूल जाएँगे ,मेरी जरूरतें पूरी करते करते अपनी जरूरतें भूल जाएँगे |सब चाहे एक तरफ हों पर वो मेरे साथ ही नजर आएँगे ,माँ बाप है वो मेरे, मेरे लिए सारी दुनिया से लड़ जाएँगे |परिवार हमारेजीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है| परिवार वह आधार है जिस पर हमारी पूरी दुनिया टिकी होती है |हमारे लिए हमारा परिवार ही हमारी शक्ति है|हमारे परिवार में कहा जाता है कि परिवार एक ऐसा स्थान है जहाँ हम समझ और सहयोग सीखते है |मेरे लिए यह शब्द बिलकुल सही है| परिवार वह ताकत है,जो हमें हर कठिनाई से लड़ने की शक्ति प्रदान करती है |चाहे वह शैक्षिक हो या व्यतिगत जीवन की जटिलताएँ| परिवार के बिना हम न केवल अकेले होते हैं ,बल्कि हम अपने जीवन का असली उद्देश्यभी नहीं समझ पाते |परिवार की शक्ति हमे अपने आत्म-संकोच से बाहर निकलकर अपनी पूरी क्षमता को पहचानने का मौका देती है |परिवार केवल व्यक्तियों का समूह ही नहीं बल्कि एक भावना है,जो हमे अपने जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है |यही शक्ति है यही ताकत है जो हमें हर मुश्किल का सामना करके अपने सपनो को साकार करने का साहस देती है | कितना भी बोलूं इनके लिए सब कम है | सच ती यह है कि परिवार है तो हम है |

वेदिका असाटी
कक्षा 9 D

परोपकार का फल

एक बार की बात है ! राम नगर नामक एक गाँव में दीनू नाम का एक निर्धन, आदमी रहता था ! किसी तरह दो जून की रोटी का इंतजाम करके वह अपना जीवन यापन कर रहा था ! एक दिन सड़क के किनारे बैठा वह सोच रहा था कि मैं किसी काम का नहीं हूँ। मैं जो भी काम करता हूँ ,सब गड़बड़ कर देता हूँ ! मेरे माँ बाप भी हमसे खुश नहीं रहते, पर नहीं जानता मेरे इस जीवन क्या होगा ?वह सोच ही रहा था कि तभी एक व्यक्ति की आवाज़ सुनकर वह चौका ! उस व्यक्ति ने दीनू से पूछा- कहो भाई, क्या बात है ; तुम इतने परेशान क्यों लग रहे हो ? दीनू को उसकी बातों से अपनापन सा लगा और उसने अपनी सारी दर्द भरी दास्ताँ सुना दी ! बात करते-करते अचानक दीनू रुक गया और उस व्यक्ति से पूछा- आप कौन हैं ? इस गाँव के तो नहीं लगते ! व्यक्ति ने कहा- नहीं भाई हम तो राहगीर हैं, दिल्ली से आ रहे हैं ! रास्ते में कार ख़राब हो गई तो मकैनिक खोजने निकला था, रास्ते में तुम्हे देखकर सोचा पूछूँ पर तुम तो किसी और ही दुनिया में... |दीनू- हाँ ! मेरा एक दोस्त है जो यह काम करता है! वह आपकी कार ठीक कर देगा।
व्यक्ति- धन्यवाद | कार बनते-बनते रात हो गई, अभी भी कुछ काम बाकी था |दीनू ने कहा- कार तो अब सुबह ही बन पायेगी ! आप चलिए पास में ही मेरा घर है! आज रात आप मेरे मेहमान हैं | व्यक्ति- आप इतनी तकलीफ़ क्यों ले रहे हैं |दीनू - इसमें तकलीफ़ की क्या बात है ; इन्सान ही इन्सान के काम आता है |व्यक्ति जब दीनू के घर पहुंचा तो उसने लाबी में देखा कि एक महान संगीतकार की तस्वीर दीवार पर लगी है | व्यक्ति ने पूछा- आपको संगीत का शौक है क्या ?दीनू- हाँ! कभी कभी सुनता हूँ और गाता भी हूँ पर उतना अच्छा नहीं |व्यक्ति- तुम अपना जीवन संगीत में भी बना सकते हो ; चलो मेरे साथ दिल्ली चलो।
दीनू- क्या! व्यक्ति- चलो सब बताता हूँ |उस व्यक्ति ने दीनू को दिल्ली ले जाकर संगीत सिखाया काफी अन्तराल के बाद जब वह बड़ा संगीतकार बन गया तो उसने उस व्यक्ति को धन्यवाद कहा; उस वक्त उसकी आँखे नम थीं |उस व्यक्ति ने दीनू से कहा कि- उस दिन तुमने मेरी मदद की थी और आज मैनें | तुम्हे याद है उस दिन जब मैं तुम्हारे घर गयाथा तो तुम्हारे घर के बरामदे में एक संगीतकार की तस्वीर देखी थी ; जानते हो वह मेरे पिता जी हैं ?दीनू उस व्यक्ति के चरणों पर गिर पड़ा और बोला- आपका बहुत बहुत आभार आज आपके पिता जी और आपकी वजह से आज मैं एक कामयाब इंसान बन सका।

(संग्रह) देवांश शाहू
कक्षा- 9 स

पहेलियाँ

1- काट मुझे तो रोओ तुम, बिन गलती सजा पाओ तुम
2- ऊपर सख्त अन्दर नर्म, स्वाद में मीठा श्वेत है रंग
3- दस पैर का जातक मैं, खेतों में हरियाली लाता था
तीन सिर और दस आँखों से, सब पर निगाहें रखता था।
4- ऐसी कौन सी चीज है जो कभी न घटती रहती है
बढ़ते बढ़ते जो घटे अंत जीव की करती है
5- रात में आता, दिन में जाता, किसी किसी को दीखता हूँ
अच्छा बुरा दोनों ही हूँ पर किसी के समझ न आता हूँ।

उत्तर -1.प्याज2.नारियल 3खेत जोतता किसान 4.उम्र 5.स्वप्न
सत्यम यादव कक्षा- 8 बी

भगवान् महावीर का परिचय

भगवान् महावीर का जन्म चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को बिहार प्रांत के वैशाली नगर के कुण्डलपुर नमक स्थान पर राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के यहाँ हुआ | भगवान की आयु 72 वर्ष की और लम्बाई धनुष की थी | इनका चिह्न सिंह था |ये जैनधर्म के अंतिम तीर्थंकर हुए |इन्हें कई नामों से जाना जाता है जैसे - वीर ,अतिवीर ,सन्मति ,वर्धमान | इन्होंने पाँच बहुमूल्य सिद्धांत दिए जो कि सत्य अहिंसा ,अस्तेय,अपरिगृह और ब्रह्मचर्य | इनका एक उपदेश - जिओ और जीने दो बहुत प्रसिद्द हुआ | इन्होंने राज पाठ छोड़कर वन में तपस्या की व पावापुर में मोक्ष को प्राप्त किया | " जो युद्ध लड़े मैदानों में ,वो इंसान वीर कहा जाए और जो युद्ध लड़े अपने मन से वो महावीर कहा जाए "

अक्षत जैन कक्षा 12 अ

राजा राममोहन रॉय का योगदान

राजा राममोहन रॉय (1772 -1833) एक ऐसा व्यक्तित्व जिन्हें भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत, आधुनिक भारत का जनक ,आधुनिक भारत का पहला प्रमुख समाज सुधारक और भारतीय पुनर्जागरण का पिता कहा जाता है ।भारतीय इतिहास में सामाजिक और धार्मिक पुनर्जागरण के क्षेत्र में उनका योगदान विशिष्ट है।

18वीं सदी के शुरुआत में जब भारत की सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों से पूरा देश लिपटा हुआ था और यहाँ तक कि धार्मिक तौर पर भी लोग अज्ञानता और गलत परंपराओं के बंधन में जकड़े हुए थे. ऐसे में राजा राम मोहन राय एक तरह से मसीहा बनकर आए और उन्होंने समाज सुधार के लिए कई असंभव लगने वाले कार्य किए जिसके लिए उन्हें कई विरोधों का सामना करना पड़ा ।राजा राममोहन राय ने अंग्रेजों की नौकरी छोड़कर अपने आपको राष्ट्र सेवा में न्योछावर कर दिया ।उनकी पहली लड़ाई स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए यूरोपीय शक्तियों से एवं दूसरी लड़ाई उनकी अपने ही देश के नागरिकों से थी । बाल विवाह, सती प्रथा, जातिवाद, कर्मकांड, पर्दा प्रथा आदि का उन्होंने जमकर विरोध किया। देवेंद्र नाथ टैगोर उनके सबसे प्रमुख अनुयायी थे।1814 में आत्मीय सभा की स्थापना की जिसमें उनसे समान विचारधारा के लोग कलकत्ता में बुद्धिजीवी स्तर की चर्चाएं कर सकें | इसमें वेदांत, मूर्तिपूजा का विरोध, जातिवाद आदि पर चर्चा होती थी ।1828 में वे ब्रह्म समाज के संस्थापक बने और लॉर्ड विलियम बैंटिक से सती उन्मूलन कानून बनवाया ।राजा राममोहन राय ने 'ब्रह्ममैनिकल मैग्ज़ीन', 'संवाद कौमुदी', मिरात-उल-अखबार ,एकेश्वरवाद का उपहार, एवं बंगदूत का संपादन-प्रकाशन किया।वे भारतीय भाषायी प्रेस के प्रवर्तक, जनजागरण और सामाजिक सुधार आंदोलन के प्रणेता, आधुनिक शिक्षा तथा बंगाल में नव-जागरण युग के पितामह थे। वह दिल्ली के मुगल सम्राट अकबर की पेंशन से संबंधित शिकायतों हेतु इंग्लैंड गए तभी अकबरद्वारा उन्हें 'राजा' की उपाधि दी गई।अपने संबोधन में 'टैगोर ने राम मोहन राय को' भारत में आधुनिक युग के उद्घाटनकर्त्ता के रूप में भारतीय इतिहास का एक चमकदार सितारा कहा।

-श्री रूपेश मिश्रा

हिंदी - एक ज़ज़्बात !

हिंदी की बात है, हिंदी में बात है,
दोस्ती पुरानी है, लेकिन नई मुलाक़ात है,
बंदिशें बढ़ी हैं, राहें जुदा हैं,
अंग्रेज़ी पर आज कल,
क्योंकि हर कोई फिदा है,
बात अद्भुत है, किस्सा वाह वाह है,
जिसकी मिल्कियत थी पहले,
आज वही कर रही सौदा है,
जुबान सबकी है, सब आज़ाद हैं,
लेकिन एक भाषा की, ज़रूरत अपवाद है,
संस्कृत धुंधली सी, हिंदी साफ साफ है,
बोलने में फिर क्यों इतनी एहतियात है,
चीनियों की चीनी, जापानी की जापानी,
अंग्रेजों की अंग्रेज़ी, फिर हम क्यों चुप चाप हैं,
विविधता का सम्मान है, बस इतनी सी बात है,
सबकी ज़िद है, सबके ज़ज़्बात हैं,
हिंदी की बात है, हिंदी में बात है।

- श्री अंशुल असाटी

होली की धूम रंगों की बौछार
प्यार और ख़ुशी का त्योहार
लोग गाते हैं नाचते हैं और हँसते है।
होली की शुभकामनाएँ सबको खुशियाँ मिलें
रंगों की वर्षा पिचकारियों की ध्वनि
होली का जश्न सबको आनंद मिले
लाल हरा पीला और नीला रंग
होली की रंगीन दुनिया सबको रंग ले
होलिका दहन बुराई पर अच्छाई की जीत
होली का सन्देश प्यार और एकता की जीत
लोग एक दूसरे को रंग लगाते हैं
होली की शुभकामनाएँ सबको प्यार मिले
होली की यादें साल भर रहती हैं
होली का जश्न मिलकर मनाते हैं
रंगों की धूम प्यार और ख़ुशी का त्योहार
होली की शुभकामनाएँ सबको खुशियाँ मिले

-श्री शशिकांत दवे (शिक्षक अंग्रेजी विभाग)

राधा की आँखें

मारे ख़ुशी के भर आई थीं राधा की आँखें
द्रवित था ह्रदय कहना चाहती थीं कुछ बातें
नैनों के छलकते आंसुओं ने धो दिया था सारा क्लेश
पर रुंधे गले से वो खोल न सकी ह्रदय के भेद ॥

सोचती थी आज जीवन में नया सबेरा आया है
बनकर 'आलोक' जीवन में मेरे छाया है
कितनी सुन्दर लग रही है आज ये दुनिया
कल तक बेगानी लगती थी जो
चुभोकर हरपाल कांटे दुखों का शैलाब लाती थी जो ॥

ऐसे में माँ बहुत समझाती थी
बेटा! छोड़ दे दुनिया की बाते
भूल जा इसकी रीति रिवाजें
यह दुनिया तो बहुरंगी है
गिरगिट की तरह बदलती है ॥

बहुत अच्छा लगता था सुन माँ की प्यारी बातें
ग़मों को भूल सोचता था मन
आएगी कभी तो ख़ुशी जीवन में मेरे अनंत
अन्य क्या क्या सोचती रही
अश्रुपूरित नेत्रों से ह्रदय व्यथा कहती रही ॥

कृतिकार
नीरज श्रीवास्तव 'आलोक'

विनम्र निवेदन

यद्यपि पत्रिका प्रकाशित करने से पूर्व यह ध्यान रखा गया है कि पत्रिका में कोई त्रुटि न रहे तथापि कोई त्रुटि रह गयी हो तो संपादक मंडल क्षमा प्रार्थी है ।पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिए आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

-संपादक

ज्ञानेन पुंसां सकलार्थ सिद्धि :

संपादक संरक्षक:-प्राचार्य ज्ञानोदय एस.एम्.व्ही.एम. हायर सेकंडरी स्कूल , खुरई

मुख्य संपादक:- डॉ. कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव

टंकण सहयोग:- श्री नीरज श्रीवास्तव

छायांकन:- श्री प्रशांत सील

सहयोग:- हिंदी विभाग

तकनीकी सहायता:- अविनाश सविता

www.facebook.com/gyanodayakhurai
gyanodayaprincipal@gmail.com
www.gyanodayakhurai.org
youtube.com/UC_7RhrC1nipjZTanSKoEVEA
gyanodayakhurai/9826829441
gyanodayacampuscare.in
Gyanodaya khurai
9826829441, 07581-292149,292154

अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु क्यूआर स्कैन करे